Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 7, Petersburg 1875

vedische Formen, act.: सँक्त् RV. 6,73,2. सँक्तम्, सँक्ती; सक्षाम् 2. sg. RV. 2,11,4. 3. sg. 1,152,7. सक्षाम 10,83,1 (AV. Prât. 4,88). सँक्षाम 7,98,4. (प्र) सक्षत्, सासँक्ष 5,25,6. 8,75,5. सासँक्स् 6,33, 1. 8,19,15. 20. सासक्षाम. med.: सँक्ते, सँक्मान (s. auch bes.), साक्षि 1. sg. RV. 10,49,1. (प्र) सँक्ष्व, साक्ष्व 3,37,7. असक्त, असक्ष्महि, साक्षे AV. 2,27,5. (प्र) साक्षते, साक्षीय AV. 19,32,10. असक्षिष्ट, सक्षिषीमँहि, °वहि, (अभि) सासक्षीष्ठाः RV. 6,45,18. समक्षे, समाक्षे, समाक्षिषे, सेक्षानँ, सासक्षानँ, (उद्) साक्ष्यः साढा P. 6,3,113. infin. सँक्ष्यै RV. 6,1,1. 7, 31,12. साक्षै, absol. साढ्वा P. 6,3,113. partic. साढँ AV. Prât. 3,7. AV. 5,30,9. In der klassischen Sprache act. nur ausnahmsweise, meist des Metrums wegen. असक्षिष्ट, सेक्षे, साक्षम् P. 6,1,12. Vop. 26, 135. सक्षिता und सोढा P. 6,3,112. 7,2,48. 8,2,31. Vop. 8,79. 125. fg. सक्षिष्यते, (संप्र) सक्ष्यति; सक्षितुम् und सोढुम्; सक्षित्वा; partic. pass. सोढ (= क्षान्त AK. 3,2,46. तदस्य सोढम् P. 4,3,52. Accent eines mit सोढ beginnenden und auf ein partic. auf त auslautenden comp. gaṇa सुखादि zu P. 6,2,170). Der Anlaut der Wurzel geht nicht in ष über, wenn in der Form ढ erscheint (परिसोढा u. s. w.) P. 8,3,115. 1) *bewältigen, gewinnen:* Feinde RV. 1,132,1. दस्यून् 3,29,9. 6,66,9. मायाः 7,98,5. वीकु 8,40,1. 10,34,9. AV. 4,36,3. 8,6,7. रक्षांसि 13,2,28. Çat. Br. 7,4,2,33. Ait. Br. 6,36. Schlachten RV. 3,24,1. 8,37,2. न शक्ता रावणं सोढुम् R. 1,22,21. Bhaṭṭ. 5,56. *Jmd* (acc.) *Gewalt anthun:* यो मेत्थमसक्थाः Ait. Br. 6,33. Çat. Br. 14,4,1,9. Ohne Object *siegreich sein:* अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सक्षाः RV. 1,152,7. 4,6,10. 7,60,10. 10, 145,5. 159,2. AV. 5,20,11. 12,1,54. 17,1,1. सँक्मान Agni 7,63,1. Indra TBr. 3,1,2,2. साक्षँस् (सक्षँस् Padap.) *bewältigend, siegreich:* दुरितानि RV. 7,12,2. 1,58,5. 2,20,6. 3,11,6. 4,21,2. पृतनासु 6,68,7. समक्षँस् dass.: अमित्रान् 1,100,5. सासक्षँस् 7,92,4. 8,16,10. 46,16. — 2) *Etwas bewältigen* so v. a. *Meister werden über Etwas, zurückhalten, hemmen:* शोकम् R. 2,26,7. 30,21. क्रोधम् Spr. (II) 5013. बाष्पम् MBh. 3,2919. R. 2,40,27. — 3) *vermögen:* युवं सु नः सक्षत्ता दासथो रयिम् RV. 8,40,1. mit infin. MBh. 3,8812. R. Gorr. 1,39,6 (असक्षती). Spr. (II) 3704 (सक्षेत्). 4710. Varâh. Bṛh. S. 104,24 (act.). Wilson, Sâṅkhjak. S. 10 (उपायस्त° zu lesen). mit dem loc. eines nom. act.: तं गर्भमसक्षती विधारणे। उत्ससर्ज गिरौ MBh. 9,2458. — 4) *Etwas ertragen, tragen* so v. a. *aushalten, überwinden, einer Widerwärtigkeit widerstehen, — nicht unterliegen:* नानुद्वान्सक्षते धुरम् (vgl. धूर्षक्) AV. 5,17,18. गङ्गायाः पतनम् — पृथिवी न सक्षिष्यते R. 1,43,25. सो ऽहं कथमिमं भारम् — सक्षेयम् 2,73,14. जटाभारमिमं कथं सक्षते 100,31. अम्भोनिधिः सक्षति दुःसहवाडवाग्निम् Spr. (II) 203. पदं (acc.) सक्षेत भमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं (nom.) न पुनः पतत्रिणः Kumâras. 5,4. बाणवर्षम्, बाणान् Hariv. 8088. वीर्यम्, बलम् MBh. 3,11388 (सक्षितं st. सक्षितुं ed. Bomb.). Ragh. 4,69. पराक्रमम् MBh. 1,5960. युधि परिस्पन्दम् 5969. वेगम् 3,4591. 4,767. 14,1718 (असक्षती). R. 5,3,78 (सक्षिष्यति am Ende eines Verses). Spr. (II) 5675. क्षणसोढारिनिग्रह adj. Ragh. 12,63. सक्षिष्यते तत्प्रथमावलम्बनम् Kumâras. 5,66. प्रीतिरोधम्, कालपरिभोगमायतम् Ragh. 11,52. शरव्राताः पुष्पवृष्टिम् 12,94. बहूनायासान् Spr. (II) 2485 (act.). विमर्दम् Bhaṭṭ. 17,59. शीतम् P. 5,2,122, Vârtt. 7. R. 5,26,27. Vikram. 135. Spr. (II) 4258. 6350. Kathâs. 17,25. 48. 56,323. Kaurap. 22. Bhâg. P. 1,10,10. 12. 10,60,56. Pańḱat. 43,24. 44,2. — 5) *Etwas ertragen, leiden,* insbes. *geduldig ertragen, sich gefallen lassen, ruhig ansehen, — anhören, — hinnehmen, über sich ergehen lassen:* दुःखमुत्तमम् MBh. 3, 15371. 15376 (सेढुः). 17298 (सेक्ष्यि). R. 2,61,3 (सक्षिष्यतः). 115,2 (126, 2 Gorr.). 7,58,12. वेदनाम् Ragh. 8,49. दशास्तास्ताः Spr. (II) 284. क्लेशम् 5316. 2015. 6467. Kathâs. 15,81. 16,115. Sarvadarçanas. 96,16. सोढः कान्ताविवोगः Spr. (II) 4087. 4315. विद्रूपतां मे सक्ताम् MBh. 1, 4265. fg. बहूनि प्रतिलोमानि Hariv. 7299. सर्वमस्य सक्षामहे R. 1,14, 15. 7,36,31 (wohl सर्वं st. सर्वे zu lesen). वदन्यस्याभिषेचनम्। नोत्सहे सक्षितुम् 2,23,11. 40,41. अनिष्टवचनम् Kâm. Nîtis. 12,15. न सक्ते संगमं नौ कृतान्तः Megh. 103. Ragh. 4,61. 10,43. Kumâras. 1,57. शब्दं सक्ते मृगाः Çâk. 14. अपराधमिमम् Çâk. Ch. 56,1. Spr. (II) 2047. 4263 (act.). 5133. 5173. 7500. Z. d. d. m. G. 27,69. Kathâs. 16,9. 17,31. 18,381. 19,70. 28,114. 31,92. 34,26. 37,152. 41,59. 48,48. Râǵa-Tar. 6,247. Prab. 74,7. Mârk. P. 68,31. Bhâg. P. 1,7,43 (act.). 4,10,7 (act.). न ते भोजनाच्छादनाभ्यधिकां वाटिकामपि सक्षामि so v. a. *gönnen* Pańḱat. 135,7. कलकमसक्षमानः *nicht ertragen können* 221,1. Hit. 15,19. वारं वारं मयैतस्यापराधः सोढः 67,12. LA. (III) 33,8. 90,9. mit acc. der Person: नोच्छ्रितं सक्षते कश्चित् *Niemand leidet einen Hochstehenden* Spr. (II) 3829. Kathâs. 33,15. सुचिरं कृत्त न सक्षते कृतविधिरिह सुस्थितं कमपि Spr. (II) 3701. (तया) सोढास्मि न वद्धवने वसती Ragh. 14,63. ohne Ergänzung: तस्मादेतैरधिक्षिप्तः सक्षेतासंज्वरः सदा M. 4,185. सक्षते ऽपथ्यमप्युक्तः (so der Comm.) Kâm. Nîtis. 5,38. Spr. (II) 2095. 4987. कठात्कुर्वति शक्रे तु कथं ब्रूहि सहामहे Kathâs. 45,148. mit gen. der Person ohne acc. der Sache *Jmd Alles nachsehen, nicht ungehalten sein über:* पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि (d. i. प्रियाया अ°) देव सोढुम् Bhag. 11,44. किमर्थं धार्तराष्ट्राणां सक्षते दुर्बलीयसाम् MBh. 3,535. तत्संचयाय (so ist zu schreiben, da तत् = तपः ist) मया सोढं तव प्रिये Kathâs. 1,42. so v. a. *Jmd verschonen:* स्वल्पकैरेव ममाक्षोभिरत्तको न सक्षिष्यति (am Ende eines Verses) Mârk. P. 109,35. मृगस्य दृष्टस्य न सक्षते (सिंहः) Pańḱat. ed. orn. 44,11. असक्षद्भिर्ममामित्रैः so v. a. *mir Nichts gönnend* R. 4,32,4. — 6) *Etwas dulden* so v. a. *anerkennen wollen:* तमिमं विभागं न सक्षते Sarvadarçanas. 46,14. असक्षमान 24,18. Sâh. D. 18,4. — 7) कालक्षेपं सक्षु so v. a. *sich einige Zeit gedulden* Kathâs. 101,135. कालम् dass. 134. Hariv. 10270. दूतिकागमनकालमपारयन्ती सोढुम् *erwarten* Vet. in LA. (III) 20,17. fg. द्वित्राण्यहान्यर्हसि सोढुम् *zwei, drei Tage dich gedulden* Ragh. 5,25. 15,45. Megh. 95. Kathâs. 49,66. — 8) सँक्त्त् so v. a. *nachhaltig, solid:* रयिं RV. 5,23,1.

— caus. साक्षयति (मर्षणे) Dhâtup. 34,4.

— desid. *bewältigen wollen:* व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् RV. 6,14,3. सीक्षन्त मन्युमुर्वः 7,60,11. तेन सक्षेम सीक्षेम TS. 2,2,8,4. nach Sâj. zu सच्.

— desid. vom caus. सिसाक्षयिषति P. 8,3,62. Vop. 19,17.

— intens. hierher liesse sich सासक्षाम u. s. w. ziehen, aber der Padap. hat in der Reduplicationssilbe die Kürze. Vgl. सासहि.

— अभि 1) *überwältigen, unter sich bringen* RV. 5,23,1. 6,45,15. 9, 20,1. पतिम् 10,159,1. आशाः Kauç. 45. Nir. 3,3. अभिषक्ष्य तु यः कन्यां कुर्यात् so v. a. *mit Gewalt schänden, nothzüchtigen* M. 8,367. — 2) *Etwas ertragen, nachsehen, verzeihen:* अक्षमा सा पराभवः स्वल्पो ऽपि

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007